दैनिक भारतीय बस्ती

भारतीय बस्ती आमंत्रण मूल्य 3रूपया

R.N.I. 38784/81 डाक पंजीकरण सं0 B.S.T 59 बस्ती, वर्ष :45 अंक 182 सोमवार 22 जनवरी 2024 (बस्ती संस्करण) बस्ती एवं अयोध्या—फैजाबाद से एक साथ प्रकाशित पृष्ठ :4मूल्य:3.00 रुपया www.bhartiyabasti.com

श्रीराम लला के प्राण प्रतिष्ठा के लिये उल्लास में डूबी अयोध्याः सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध

संवाददाता– अयोध्या ।अयोध्या के राम मंदिर में 22 जनवरी को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होनी है। हालांकि मूर्ति की प्राण प्रतिष्ष्ठा की प्रक्रिया 16 जनवरी से ही शुरू हो गई है। मुख्ख्य प्राण प्रतिष्ष्ठा कार्यक्रम 22 जनवरी को मंदिर के गर्भग्रह में होनी है। इस पूजा में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शामिल होंगे। प्राण–प्रतिष्ठा का कार्यक्रम अभिजीत मुहूर्त में किया जाना है। 22 जनवरी को दोपहर 12 बजकर बजकर 29 मिनट 8 सेकंड से 12 बजकर 30 मिनट 32 सेकंड तक अभिजीत मुहूर्त होगा। यह मुहूर्त सिर्फ 84 सेकंड का रहेगा। इस पावन दिन बन रहे हैं बेहद ही शुभ योग– 22 जनवरी को पौष माह की द्वादशी तिथि है। रामला की प्राण प्रतिष्ठा का पूरा कार्यक्रम अभिजीत मुहूर्त, इंद्र योग, मृगशिरा नक्षत्र, मेष लग्न एवं वृश्चिक नवांश में किया जाएगा।

भगवान श्री राम की प्रतिमा 4.24 फीट ऊंची है। प्रतिमा 3 फीट चौड़ी है। प्रतिमा का वजन लगभग 200 किलोग्राम है। मस्तक पर सूर्य, स्वस्तिक, ६, गदा और चक्र है। मूर्ति में मत्स्य, कूर्म, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि अवतार भी बने हुए हैं। वहीं, निचले स्थान पर दाईं तरफ हनुमान जी और बाईं तरफ गरुड़ देव जी भी हैं।

अयोध्या की अभेद्य सुरक्षा के चलते सोमवार को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में परिंदा भी पर नहीं मार सकेगा। पूरी अयोध्या को सात चक्रीय सुरक्षा घेरे में ले लिया गया है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए अयोध्या में ब्लैक कैट कमांडो, बख्तरबंद गाड़ियां, एंटी ड्रोन व एंटी माइंस ड्रोन सिस्टम व एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) लैस कमांड कंट्रोल सिस्टम के साथ उप्र पुलिस सहित विभिन्न सुरक्षा एजेंसीज के 13,000 हजार से ज्यादा जवानों की तैनाती की गई है।

पुलिस मुख्यालय पर बने कंट्रोल रूम से अयोध्या की हर गतिविधियों पर नजर रखी जा रही है। डीजी कानून व्यवस्था प्रशांत कुमार ने बताया कि एसपीजी के साथ मिलकर पुलिस ने सुरक्षा की सारी तैयारियां पूरी कर ली हैं।

अयोध्या में बनाए गए सुरक्षा घेरे में सबसे अंदरूनी घेरा एसपीजी के जवानों का होगा। इसके बाद एनएसजी के ब्लैक कैट कमांडो के साथ एसटीएफ का घेरा रहेगा। एटीएस की टीम की जिम्मेदारी तीसरे सुरक्षा घेरे की है।

चौथे सुरक्षा घेरे में उप्र पुलिस व सीआरपीएफ के जवानों को तैनात किया गया है। पांचवे घेरे में आरएएफ की तैनाती की गई है। सातवें घेरे में पीएसी के जवानों को तैनात किया गया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सुरक्षा के लिए फाइव लेयर सुरक्षा तैयार की गई है। उनके सबसे नजदीक एसपीजी की टीम रहेगी। इसके बाद दूसरी लेयर में एनएसजी के ब्लैक कैट कमांडो रहेंगे।

तीसरी लेयर में एसटीएफ की टीम तैनात की गई है। चौथी लेयर में अर्धसैनिक बलों के जवान रहेंगे और पांचवी लेयर में उप्र पुलिस के विशेष प्रशिक्षित जवान तैनात रहेंगे।

एक नजर

सजाये गये कार्यालय

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

कुदरहा, (बस्ती)। अयोध्या में श्री राम मंदिर के नूतन विग्रह प्रतिष्ठा कार्यक्रम के तहत खंड विकास कार्यालय को खूब सजाया गया। कर्मचरियो द्वारा ब्लाक की साफ–सफाई भी किया गया। साथ ही साथ पंचायत भवनों पर भी दीपक जगमगाते दिखा।

खंड विकास अधिकारी विनय कुमार द्विवेदी ने बताया कि ब्लाक के साथ साथ क्षेत्र के मंदिरों व सभी पंचायत भवनों की भी सजावट करायी गयी है।

नाली, सी.सी. रोड का उद्घाटन

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। रविवार को साऊंघाट विकास खण्ड के ग्राम पंचायत पकरी नासिर में मनरेगा योजना से निर्मित जमातुल्लाह के घर से राम सुभाव के घर तक नाली एवं सी.सी. रोड का उदघाटन रहमत अली खान ने किया। अध्यक्षता करते हुये राम फेर निषाद ने कहा कि नाली एव सी.सी. रोड के बन जाने से ग्रामीणों को काफी सुविधा होगी। ग्राम प्रधान श्रीमती भानमती यादव ने कहा कि उनका प्रयास होगा कि विकास का कार्य निरन्तर जारी रहे। सचिव रीता चौधरी ने कहा कि अन्य कार्य शीघ्र पूरे कराये जायेंगे।

इस अवसर पर गांव के सरोज कुमार, जमातुल्लाह, भगवती निषाद, अब्दुल्लाह, मोहम्मद यूनुस, दिलीप निषाद, अकील अहमद, राम सागर, असलम, राम सुभाव, राजिया खातून, इरसाद अहमद, राम किशुन, मोहम्मद खालिद, मुक्तेश्वर यादव, जय शंकर, आनिक, जुम्मन अली, वहीद, विजय कुमार, साजन कुमार, लल्लन खान, रईश, शमसेर, पंकज, सलमान, रियाज, नरेंद्र, जमील, साकिब, सारीब, जिलाजीत, अनुराग यादव के साथ ही गांव के अनेक लोग उपस्थित रहे।

कोलकाता पुस्तक मेला मे जर्नालिस्ट क्लब ने किया अनूठी पहल

कोलकाता (आभा)। कोलकाता साल्टलेक के सेन्ट्रल पार्क मे आयोजित 47वां अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला 18 जनवरी से शुरू हुआ हैं , यह 31 जनवरी तक चलेगा । बोर्ड की परीक्षाओ को देखते हुए पुस्तक मेले को समय से पहले ही आयोजित किया गया हैं ।

इस साल के पुस्तक मेले का प्रमुख आकर्षण जर्मनी हैं । करीब बारह वर्षो के बाद जर्मनी कोलकाता पुस्तक मेले मे हिस्सा ले रहा हैं । इस वर्ष यूनाइटेड किंगडम को थीम देश के रूप मे चुनाव गया हैं । मेले मे अमूमन 1000 से भी अधिक स्टाल इस बार लगे हैं ।

हर साल कि तरह इस साल भी मेले मे कलकत्ता जर्नालिस्ट क्लब का स्टाल (नंबर 386) लगा हैं यहाँ आपको हर तरह कि किताबें मिल जाएंगी । इसके अलावा क्लब के सामाजिक कार्य के बारे मे भी आप जानकारी ले सकते हैं । कलकत्ता जर्नालिस्ट क्लब के स्टाल मे रीता मन्ना कि पुस्तक 'अमल के बोलछि' और पम्पा सेन शर्मा कि :मन तुई' का विमोचन क्लब के सभापति प्रन्तिक सेन के हाथों हुआ ।

क्लब के अध्यक्ष प्रान्तिक सेन ने बताया कि पत्रकारिता जगत के साथ ही साथ विभिन्न विषयो से जुडी पुस्तक उनके स्टाल पर मौजूद हैं। यहां पत्रकारिता के विद्यार्थी आवश्यक जानकारी ले सकते हैं ।

अयोध्या जा रहे यात्रियों के लिये रैन बसेरों का बीएसए ने किया निरीक्षण

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। सोमवार को अयोध्या में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिये अयोध्या धाम जाने वाले यात्रियों की सुविधा के लिये बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा नेशनल हाईवे के निकट पड़ने वाले 6 विद्यालयों में रैन बसेरा बनाया गया है जिससे किसी यात्री को कडाके की ठंड में असुविधा न होने पाये। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी अनूप कुमार तिवारी ने रविवार को श्री वाल्मीकि इंटर कॉलेज विक्रमजोत में बने हुए रैन बसेरा का निरीक्षण किया । विद्यालय में पर्याप्त रूप से बिस्तर, चारपाई, बिजली की कमी ना रहे इसके बारे में जायजा लिया और नोडल अधिकारियों को निर्देश दिया कि रैन बसेरा में आने वाले लोगों के लिए समुचित प्रबंध किया जाय। बताया कि किसान इण्टर कालेज मरहा कटया, इंन्दिरा गांधी इण्टर कालेज कप्तानगंज, नेशनल इण्टर कालेज हर्रैया, अशोक इण्टर कालेज छावनी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी इण्टर कालेज पचवस में रैन बसेरा बनाया गया है। बीएसए के साथ वरिष्ठ लिपिक संतोष गुप्त, जयप्रकाश, राकेश कुमार पाण्डेय आदि निरीक्षण में शामिल रहे।

पुरानी पेंशन बहाली के लिये शिक्षकों की बैठक में बनी महाहड़ताल की रणनीति

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती। रविवार को बीआरसी परसरामपुर पर उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष उदय शंकर शुक्ल की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें नव चयनित वरिष्ठ उपाध्यक्ष महेश कुमार का स्वागत करते हुए सैकड़ों शिक्षकों ने संगठन की सदस्यता ग्रहण की।

बैठक को सम्बोधित करते हुए संघ जिलाध्यक्ष उदयशंकर शुक्ल ने कहा कि पुरानी पेंशन बहाली आन्दोलन में महाहड़ताल शीघ्र घोषित हो सकती है। इसलिए सभी पदाधिकारी शिक्षकों से संपर्क करें और महाहड़ताल के लिए तैयार करें।

इसी क्रम में विकास क्षेत्र परसरामपुर में 31 जनवरी और दुबौलिया के शिक्षकों की बैठक 01 फरवरी को करने की घोषणा किया गया।

वरिष्ठ उपाध्यक्ष महेश कुमार ने ने कहा कि जनपद एवम् क्षेत्रीय संगठन द्वारा दी गई जिम्मेदारियों पर खरा उतरने का सदैव प्रयास करूंगा।

बैठक में संघ के जिला उपाध्यक्ष दिवाकर सिंह, ब्लॉक अध्यक्ष देवेन्द्र वर्मा,राजीव पाण्डेय,त्रिलोकी नाथ,सतीश शंकर शुक्ल,रक्षा राम, नरेन्द्र दूबे शोभा राम वर्मा,सुनील पाण्डेय,दिनेश कुमार,सुखराज गुप्ता,प्रमोद वर्मा,विजय कन्नौजिया आदि ने बैठक को सम्बोधित करते हुये शिक्षक समस्याओं पर चर्चा के साथ ही एकजुटता पर जोर दिया। बैठक में रामपति कन्नौजिया, राघवेंद्र चौधरी, अरविन्द पाण्डेय, अयोध्या प्रसाद पाण्डेय, रविन्द्र नाथ, पांचू प्रसाद, भगवान दास, राहुल वर्मा,अनिमेष वर्मा, देवेन्द्र, वैभव कन्नौजिया, भरत राम, लालेन्द्र, अनुपम सिंह, स्वतंत्र कुमार, अमित वर्मा, सन्तोष कुमार वर्मा आदि उपस्थित रहे।

श्रीराम लला के प्राण प्रतिष्ठा पर अस्पताल, हाईवे बंद होना दुर्भाग्यपूर्ण– बबिता शुक्ला

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती । कांग्रेस की वरिष्ठ नेता बबिता शुक्ला ने अयोध्या धाम में श्रीराम लला के प्राण प्रतिष्ठा आयोजन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुये कहा कि प्रभु श्रीराम सबके हैं और सबमें हैं किन्तु जिस प्रकार से भारतीय जनता पार्टी, संघ परिवार और हिन्दू संगठनों ने इसे व्यक्तिगत कार्यक्रम बना लिया है यह दुर्भाग्यपूर्ण है। कहा कि मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के प्राण प्रतिष्ठा का सबसे उपयुक्त दिन तो श्रीराम नवमी होता किन्तु भाजपा के रणनीतिकारों ने श्रीरामलला को चुनावी हथियार बना दिया है। शंकराचार्यो तक के सृजनात्मक प्रतिरोध की अनदेखी भाजपा को माफ नहीं करेगी।

प्रेस को जारी विज्ञप्ति के माध्यम से कांग्रेस नेता बबिता शुक्ल ने कहा कि यह हैरान कर देने वाली बात है कि सुरक्षा के नाम पर हाईवे बंद है, लोगों को कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है, सब्जी, दूध से लेकर आवश्यक सामग्री का संकट है और मरीज इलाज कराने लखनऊ तक नहीं जा पा रहे हैं जबकि मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम ने तो अहिल्या उद्धार के साथ ही निषादराज, शेबरी से लेकर बानर, भालू से लेकर जो भी मिला उसे आदर दिया। कहा कि असम में कांग्रेस की न्याय यात्रा लेकर कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी और यात्रियों को निशाना बनाकर जिस प्रकार से प्रायोजित हमले भाजपा के गुण्डों के द्वारा कराया जा रहा है वह लोकतंत्र के लिये बड़ी खतरे की घंटी है। मुख्यमंत्री हेमन्ता विश्वाशर्मा और भाजपा को देश और असम की जनता माफ नहीं करेगी उन्होने कहा कि अस्पतालों में अवकाश का निर्णय सरकार तुरन्त वापस ले क्योंकि इससे कई जिन्दगियां प्रभावित होंगी।

श्रीराम लला प्रतिष्ठा को लेकर बस्ती में चतुर्दिक उल्लास

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती ।अयोध्या में रामलला के विराजमान होने की खुशी में पूरी दुनिया में सभी धार्मिक और सामाजिक संगठनों द्वारा विभिन्न आयोजन हो रहे हैं। अनेको शोभा यात्रा के साथ ही मंदिरों को विशेष रूप से सजाया गया है और भजन कीर्तन का आयोजन है।

इसी कड़ी में आर्य समाज इस दिवस को 'विश्व गौरव दिवस' के रूप में मनाएगा। ओम प्रकाश आर्य प्रधान आर्य समाज नई बाजार बस्ती के नेतृत्व में तीन दिवसीय रामचर्चा का शुभारंभ आज सुरतीहट्टा बस्ती के प्राचीन शिव मन्दिर से हुआ जिसमें अनिल कुमार और गरुण ध्वज पाण्डेय के ब्रह्मत्व में मुहल्ले वासियों ने यज्ञ में आहुतियां दीं और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम चर्चा में शामिल हुए।यज्ञ में शिवाजी साहू और मनोज

कुमार सपत्नीक यजमान रहे। ओम प्रकाश आर्य ने बताया कि दिनांक 22 एवं 23 जनवरी को स्वामी दयानन्द विद्यालय में 9रू30 बजे से 12 बजे तक वैदिक यज्ञ और रामचर्चा होगी। इस अवसर पर यज्ञाचार्यों ने लोगों को श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेने की सलाह दी। पूर्व सभासद चुनमुन लाल ने कहा कि हमें भगवान राम से उत्तम संस्कारों को सीखना चाहिए जिससे हम पुनः विश्व को राम दे सकते हैं। यज्ञ के माध्यम से ही ऋषि श्रृंगी ने दिव्य आत्माओं का आवाहन करके महाराज दशरथ को चार संतानों का सुख दिया जिनसे पूरा विश्व आज प्रेरणा प्राप्त कर रहा है। आर्य समाज गांधी नगर में आयोजित 'भगवान श्रीराम हम सबके हैं' कार्यक्रम में सत्येन्द्र वर्मा और अरविन्द मिश्र ने रामायण का संक्षेप में वर्णन किया और लोगों को उनके चरित्र से प्रेरणा लेने का आह्वान किया। ओम प्रकाश आर्य प्रधान आर्य समाज नई बाजार बस्ती ने बताया कि श्रीराम हमारे ही नहीं बल्कि पूरे मानवमात्र के आदर्श हैं। हमें उनके चरित्र में एक पुत्र, एक भाई, एक पति, एक राजा और एक धर्मरक्षक के गुण दिखाई देते हैं। अपने में राम को अनुभव करके हम पुनः रामराज्य ला सकते हैं। कार्यक्रम में मुख्य रूप से शिव श्याम, नितीश कुमार, दिलीप कुमार, दुर्गा, रितेश कुमार, महिमा आर्य, उपेन्द्र आर्य, अमित कुमार, बृजकिशोर, हरिपति पाण्डेय, मुरलीधर भारती, अरुण भारती, सुमन आर्य, उमा आर्य, जवाहर यादव, देवव्रत आर्य, नीलिमा श्रीवास्तव आदि सम्मिलित रहे।

कांग्रेस ने कार्यकर्ताओं से बनाया संवाद

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

बस्ती, कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय सचिव एवं पूर्वी जोन के प्रभारी सत्यनरायन पटेल ने कहा कि नीतियों और विचारधारा के दम पर जो पार्टी कांग्रेस मुक्त भारत का सपना देख रही थी वह अब राम के नाम पर वोट मांग रही है। वे पार्टी दफ्तर पर आयोजित कार्यकर्ता संवाद कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होने कहा दरअसल उसकी नीतियां बुरी तरह फ्लॉप हुई हैं। जाति, धर्म, ऊंच नीच, अमीर गरीब के नाम पर समाज को बांटकर विकसित भारत का सपना किसी कीमत पर नही पूरा हो सकता।

कांग्रेस नेता ने कहा भाजपा का विकसित भारत का रथ गांव गांव पहुंच रहा है, आम जनमानस को गुमराह होने की बजाय सत्ता से जुडे लोगों से पूछना चाहिये कि 81 करोड़ गरीबों को मुफ्त राशन बांटने का दावा करने वाली पार्टी देशवासियों को विकसित भारत का सपना कैसे दिखा सकती है। सत्यनरायन पटेल

ने कहा भाजपा का कांग्रेस मुक्त भारत का सपना पूरा नही हुआ लेकिन राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा एक दिन देश को भाजपा मुक्त जरूर कर देगी।

कार्यकर्ता संवाद कार्यक्रम को प्रदेश उपाध्यक्ष केशव चन्द यादव, प्रदेश महासचिव अमरेन्द्र मल्ल, जिला प्रभारी दिलीप निषाद आदि ने पार्टी को बूथ स्तर तक मजबूत करने के लिये कार्यकर्ताओं से उनका विचार जाना और अपने विचारों को भी साझा किया। कार्यक्रम कां संचालन प्रवक्ता मो. रफीक खां व अध्यक्षता जिलाध्यक्ष ज्ञानेन्द्र पाण्डेय 'ज्ञानू' ने किया। प्रदेश सचिव देवेन्द्र श्रीवास्तव ने कहा 2024 का लोकसभा इलेक्शन दो विचारधाराओं का जंग होगा, एक विचारधारा लोकतंत्र को बचाने की खातिर जनता के बीच में जायेगी तो दूसरी भगवान के नाम पर वोट मांग कर खुद के वैचारिक दरिद्र होने का प्रमाण देगी। इस बीच जनता और कांग्रेस कार्यकर्ताओं को सावधान रहना होगा ।कार्यकर्ता संवाद कार्यक्रम में प्रमुख रूप से अनिल कुमार भारती, सुनील पाण्डेय, शीतला शुक्ला, साधूसरन आर्या, विश्वनाथ चौधरी, भूमिधर गुप्ता, नर्वदेश्वर शुक्ला, सुरेन्द्र मिश्रा, गुड्डू सोनकर, कौशल त्रिपाठी, जयंत चौधरी बबिता शुक्ला आदि उपस्थित रहे।

"मुझे अखबार निकालने दो तो मै इस बात की परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता"—वेंडेल फिलिप्स

दैनिक
भारतीय बस्ती
बस्ती 22 जनवरी 2024 सोमवार

सम्पादकीय

श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा

श्री अयोध्या धाम में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा निश्चित रूप से एक बडा अवसर है। उत्तरकोशला की राजधानी अयोध्या जिसे अवध और साकेत भी कहते है तथा जो तीर्थ–रूपी विष्णु का मस्तक कही गयी है और इस अयोध्या की गणना इस धरा के सात तीर्थो में प्रथम है होती है, यथा– अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका। पुरी द्वारावती चौव सप्तेता मोक्षदायिकाः। अयोध्या का सौन्दर्य ब्रम्हलोक के सौन्दर्य व छटा पर विजय पताका फहरा रहा था जिसका उल्लेख मिलता है कि –अयोध्यानगरी रम्या सर्व्वलक्षणसंयुता। जितब्रम्हपुरी साक्षाद्वैकुण्ठ इव विश्रुता। ''वह नगरी जिसके समक्ष ब्रम्हलोक की मनोहरता फीकी पड़ती थी, उस नगरी के अधिपति राम को उनकी जन्मभूमि ''रामकोट मंदिर'' को आक्रान्ताओं का शिकार होना पडा था। 496 साल बाद रामलला अवधपुरी के अपने पुराने जन्मभूमि स्थल के नये भव्य विशाल भवन में 22 जनवरी 2024 को विराजित हो रहे है। अवधपुरी में रामलला के विराजित होने का महोत्सव को भव्यतम स्वरूप दिए जाने में समूचा देश अपने पलक पॉवने बिछाए तैयार है, जिसकी गूंज दुनियाभर के देशों में है और विश्व के अनेक देशों में करोड़ों श्रद्धालुओं द्वारा यह पावन अवसर का यादगार बनाए जाने की तैयारी है ताकि 496 सालों की अंधियारी रातों का अंधेरा ऐसा गायब हुआ कि इस राजवंश के निवास स्थान तथा सूर्यवंश से उत्पन्न रामलला के जन्मस्थान मंदिर अपने आप में एक भव्य तीर्थ बन गया जिसकी प्रशंसा एवं भक्ति में हर व्यक्ति अयोध्या की रज को अपने मस्तक पर लगाए जाने हेतु अयोध्या की ओर भाग रहा है।

वाल्मीकि रामायण में कौशल का वर्णन मिलता है –कोसलो नाम विदितःस्फीतो जनपदों महान। निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान।'' अर्थात सरयू के किनारे धनधान्यवान देश कौशल है ''निविष्ट'' शब्द का अभिप्राय यह कोशल सरयू के दोनों किनारों पर बसा है। उत्तरकोशला की राजधानी अयोध्या तीर्थो में पहली पुरी है। विष्णु के मस्तक से सुशोभित अयोध्या के विषय में उल्लेख मिलता है कि –'विष्णोः पादमवन्तिकां गुणवतीं मध्ये च कांचीपुरीन। नाभिं द्वारवतीन्तथा च हृदये मायापुरी पुण्यदाम्। तीर्थराज प्रयाग, मुक्तिदायिनी विश्वनाथपुरी काशी इसी कोशला में है। इसी कोशला में अयोध्या के राजा भगीरथ कठिन परिश्रम से गंगा को पृथ्वी पर लाए थे तथा 24 तीर्थकरों में से 22 इक्ष्वाकुवंशी थे जिनमें पहले तीर्थकर आदिनाम ऋषभदेव सहित चार अन्य तीर्थकरों का जन्म इसी अवध में हुआ था। शाक्य मुनि की जन्मभूमि कपिलवस्तु और निर्वाणभूमि कसियो कोशला में थे और इसकी राजधानी अयोध्या में उन्होंने अपने धर्म की शिक्षा दी और सिद्धान्त बनाए जो जगप्रसिद्ध हुए जिसे बौर्द्धमत वाले आकांक्षा करने के साथ निर्माण नाम देते है।

वाल्मीकि रामायण में अयोध्या की तुलना उससमय मृत्युलोक की अमरावती से बढ़कर करते हुए कहा गया है कि भूमण्डल की सबसे पहली लोकप्रसिद्ध राजधानी स्वयं आदिराज महाराज मनु ने बसाई थी जिसका विस्तार अडतालीस कोस लम्बी और बारह कोस चौड़ी थी देखें–''अयोध्या नाम तत्रास्ति नगरी लोकविभूता। मनुना मानवेन्द्रण पुरैव निर्मिता स्वयंम्। आयता दश च द्वे च योजनानि महापुरी। श्रीमति त्रीणि विस्तर्णा नानासंस्थनशोभिता।'' इस वर्णन मेंनगरमात्र का उल्लेख मिलता है जिसमें राजमहल वा दुर्ग पृथक रहे है। ''अयोध्या'' नाम की सार्थकता में कहा गया है 'जिसे शत्रु जीत न सके, वहीं अयोध्या है। अयोध्या नगरी के वर्णन में वाल्मीकि ''दुर्गगम्भीर–परिखा'' विशेषण देते है वहीं स्वामी रामानुजाचार्य ने व्याख्या की है कि–जल दुर्गेण गम्भीरा अगाधा परिखा यम्याम्। जिससे समझा जा सकता था कि अयोध्या जलदुर्ग से पूर्णतया सुरक्षित थी।

तब रामराज्य में अयोध्या नगरी के मार्गो का सुन्दर ओर स्पष्ट वर्णन में उल्लेख मिलता है कि नगर के चारों ओर सैर करने के मार्ग महापथ कहलाते थे एवं राजप्रसाद महल के मध्य भाग के चार द्वार थे जो सभी ओर से शोभित राजमार्ग कहाते थे। अवधपुरी को सुवासित किए जाने हेतु प्रतिदिन राजपथ ,महापथ ही नहीं अपितु नगर के मोहल्लों में सुगंधित पुष्पों की वर्षा की जाती थी देखें– मुक्तपुष्पावकीणन जलस्किन नित्यशः।

जब भी अवधपुरी में कोई विशेष उत्सव होता तब सर्वत्र चंदन के जल का छिडकाव होता और कमल तथा उत्पल सब जगह शोभित किए जाथे थे। मार्ग और सड़कों पर रात्रिके समय दीपक का प्रकाश राजकीय प्रबन्ध से किया जाता था, राम राज्याभिषेक की पहली रात्रि को भी सभी मार्गोमें दीपकवृक्ष लगाकर अवधपुरी को दिनमान जैसा रोशन किया गया था।यथा– प्रकाशीकरणार्थश्च निशागमनशंक्ख्या। दीपवृक्षांस्तथा चक्रुरनुरथ्यासु सर्व्वशः।ऐसे उत्सव के समय मार्ग के दोनों और पुष्पमाला,ध्वजा और पताका लगायी गयी। राजमार्ग के दोनों और सुन्दर सजी सजाई नाना प्रकार की दुकानें शोभायमान थी। इसके सिवाय कहीं उच्च अटटालिका सुसमृद्ध चारू दृश्यमान बाग थे, कहीं वाणिज्यागार और कहीं भूधर–शिखर सम देव निकेतन पुरी की शोभा बढ़ा रहे थे जिसका वर्णन स्वयं ब्रम्हा भी नहीं कर सकते थे।

आज 496 सालों बाद अवधपुरी में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम अपने बालरूप में जन्मस्थान पर विराजमान होने जा रहे है। वाल्मीकि जी के अनुसार रामराज्य में जिस तरह अयोध्या वासी धर्मपरायण, जितेन्द्रिय, साधु और राजभक्त थे, चार वर्ण के लोग अपने अपने धर्म में स्थित थे, सभी हष्ट, पुष्ट, तुष्ट,अलुब्ध और सत्यवादी थे, नारियॉ धर्मशीला और पतिव्रता थी, आज के सन्दर्भ में भले ही वाल्मीकि जी की ये सभी बातें कल्पनामयी हो किन्तु राम के प्रति आस्था, राममंदिर निर्माण के बाद उनके श्रीविग्रह की प्राणप्रतिष्ठा ने पूरे राष्ट्र में राम के प्रति जो अलग जगायी है, वह ज्योति पूरे राष्ट्र में प्रज्वल्वित हो चुकी है और लोगों के मन में रामजन्मभूमि पर स्थापित राममंदिर उनकी श्रद्धा एवं आस्था का केन्द्र बन चुका है। देश राममय हो गया है, हर नगर, हर गॉव में राम के आगमन का स्वागत में ध्वाजाओं से मनोहारी सजावट हो रही है। यह अलग बात है कि धर्मध्वाजावाहक शंकराचार्यो के मतानुसार वैदिक परम्पराओं एवं सनातन धर्म की मान्यताओं का पालन न होने से यह राजनीति की बिसात समझकर उपेक्षित किया जा रहा है, परन्तु आस्था, श्रद्धा और भक्ति का सागर इन सारे तर्को को दरकिनार कर 22 जनवरी को रामलला की घर वापसी का भव्यता से स्वागत हेतु अपने पलक पॉवड़े बिछाए इन पलों की प्रतीक्षारत है। यह देश के लिये गौरव का क्षण है।

स्वाभिमान और गौरव के पुर्नस्थापना का दिन

—आशीष वशिष्ठ—

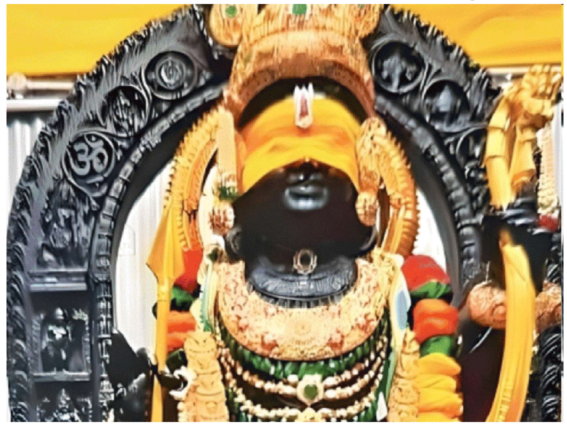

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का स्वर्णिम और ऐतिहासिक अवसर सनातनधर्मियों को कड़े संघर्ष से हासिल हुआ है, जिसका 550 सालों से अधिक का इतिहास है। इसमें 70 से अधिक बार का संघर्ष, जिसमें से अधिकतर मुगल आक्रांताओं द्वारा भारतवासियों और हमारे मंदिरों पर हमले का रक्तरजिंत इतिहास शामिल है। अनगिनत आन्दोलनों के बाद अब अंततः 22 जनवरी 2024 के दिन हिन्दू समाज को अपने आराध्य प्रभु श्रीराम को जन्मभूमि पर निर्मित भव्य मन्दिर में पुर्नस्थापित करने का गौरव प्राप्त हो रहा है। यह दिन भारत की आस्था, अस्मिता, स्वाभिमान और गौरव की पुनर्स्थापना का दिवस है। राम राष्ट्र की संस्कृति है, राम राष्ट्र के प्राण है, राम के मंदिर का मतलब भारत का नवनिर्माण है।

सोमनाथ मंदिर को अंतिम बार औरंगजेब ने यह कहकर तोड़वाया था कि, 'इस बार इसे पूरी तरह नेस्तानाबूद कर दो कि मंदिर का कहीं कोई निषान तक दिखाई न दे।' सोमनाथ पर मंस्जिद और कब्रिस्तान को सरदार पटेल ने इतिहास की विकृति का चिह्न और राष्ट्रीय अपमान बताकर कहा था कि, '' राष्ट्र के गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा के लिए सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण आवष्यक है।'' गांधी जी भी इससे सहमत थे। हिन्दू बहुल देश में प्रभु श्री राम की जन्मस्थली को मुक्त करवाने में जिस तरह के अवरोध उत्पन्न किए गए वे अकल्पनीय हैं। यदि सोमनाथ के साथ ही राम जन्मभूमि का मसला भी तत्कालीन नेहरू सरकार सुलझा लेती तब शायद इसे लेकर राजनीति करने का किसी को अवसर नहीं मिलता।

स्व. अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार संसद में कहा था कि राम मंदिर का निर्माण राष्ट्रीय स्वाभिमान का मुद्दा है। उनका वह वक्तव्य सही मायने में एक संदेश था जिसमें राजनीति नहीं थी। सही बात तो ये है कि राम मंदिर का विरोध करने वालों ने ही इसे वोट बैंक की राजनीति का हिस्सा बना दिया। कांग्रेस और अन्य कुछ दल मुस्लिम मतों के कारण इस मुद्दे पर हिंदुओं के न्यायोचित दावों की अनदेखी करते रहे। प्रतिक्रिया स्वरूप इस मामले ने दूसरा मोड़ ले लिया। लेकिन दुर्भाग्य है कि देश की बहुसंख्यक आबादी के आराध्य श्रीराम की जन्मभूमि को अवैध कब्जे से मुक्त करवाने का कार्य न्यायालय के निर्णय से संभव हो सका। और वह प्रक्रिया भी वर्षों नहीं दशकों तक चली। सबसे बड़ी बात ये हुई कि बाबरी ढांचे की तरफदारी मुस्लिम धर्मगुरुओं के साथ ही साथ धर्मनिरपेक्षता के झंडाबरदार बने हिन्दू नेतागण भी करते रहे।

यह भी कम दुखद नहीं है कि उस निर्णय के बाद भी मंदिर निर्माण में अड़ंगे लगाने वाले विघ्नसंतोषी अपनी हरकतों से बाज नहीं आए। यहां तक कि प्राण–प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक आयोजन की पूरी तैयारियां हो जाने के बाद भी उसे विफल करवाने में एक वर्ग जी–जान से जुटा है। कुछ धर्माचार्य भी इस मुहिम में शामिल हो गए हैं। शाश्वत राष्ट्रीय अस्मिता को तात्कालिक और राजनीतिक हानि–लाभ की दृष्टि से देखा जा रहा है।

वास्तव में, कपटी और विकृत सिद्धांतकारों की परेशानी सहज और स्वाभाविक है। कई दशकों की उनकी दुकान के उठ जाने की सबल संभावना कोई सामान्य घटना नहीं है। उनके शब्द चुक गए हैं। प्रयोग में लाये नये शब्दों की शब्द शक्ति समाप्त हो गई है। वे अपनी पुरानी और सतही अवधारणाओं के बंधुआ श्रमिक हैं। किसी नये शब्द संसार की सृष्टि कर पाना अब उनके लिए संभव नहीं है। इन सभी ने गांधीवाद को बेच खाया। इनका समाजवाद पिट गया। पूंजीवाद का संताप भोग रहे देशों की दुर्दशा सबके सामने है। उनके सामने समस्या है कि क्या कहें, क्या करें? नश्वर को अनश्वर ओर समय सापेक्षता को सनातनता मानकर की गई भूल का परिमार्जन करने का उनमें साहस भी नहीं है। यही कारण है राष्ट्रीय संताप को समाप्त करने का अभियान अयोध्या से प्रारंभ हुआ और राष्ट्रीय अस्मिता राम रथ पर सवार होकर सोमनाथ से अयोध्या की ओर चली तो इन छद्मवेशियों के मोहल्ले में कोहराम मच गया।

जिस दल की वैचारिक धारा में देश के सभी नागरिक समान रूप से शामिल नहीं होंगे, वह दल विकल्प नहीं बन सकता। वह देश का हित भी नहीं कर सकता। देश किसी छोटे–बड़े प्रतिशत का नहीं, उस शत प्रतिशत का होता है जो इसके प्रति पूर्ण प्रतिबद्ध, बिना शर्त और सहजभाव से समर्पित होते हैं। देश की आबादी के इस सहज समर्पण को ही राष्ट्रीयता की संज्ञा प्रदान की गई। देश की आबादी का हर वह अंश जो असहज हो, अपने विषय में अलग से सोचता हो, केवल अपने हित को ही राष्ट्रहित समझता हो, अराष्ट्रीय है। इस प्रवृत्ति को बढ़ावा देने और इसका पालन पोषण करने वाले सभी लोग अराष्ट्रीयता को बल प्रदान करने के अपराधी हैं।

राष्ट्र का घायल स्वाभिमान, आहत मन, टूटा विश्वास, अपमानित इतिहास और कुंठित राष्ट्रीय अस्मिता के परिमार्जन का दैवीय अवसर उपस्थित है। परमात्मा द्वारा प्रेरित ईश्वरीय कार्य सम्पन्न करने का सौभाग्यशाली क्षण 22 जनवरी को वह मुहूर्त होगा जब श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा होगी। अपने पूर्वजों की पराजय को विजय में बदलने और बलिदानों को मूल्य चुकाने के लिए इस राष्ट्रीय दायित्व का जो लोग निर्वाह करेंगे वे भविष्य में कलेजे का रक्त बनेंगे। वे इतिहास के प्राणवान पृष्ठ लिखेंगे राष्ट्रीय गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा की यह कथा इतिहास के पन्नों पर सोने का शब्द बनकर उभरेंगे और तभी वास्तविक स्वाधीन भारत राष्ट्र का पुनर्जन्म होगा। गांधी के रामराज्य का सूत्रपात नवनिर्मित राम मंदिर में श्रीरामलला की प्रथम आरती करेगी। इसमें कोई दो राय नहीं है कि, शताब्दियों का संघर्ष अब अयोध्या में प्रत्यक्ष साकार रूप में फलीभूत होता दर्शित हो रहा है। भारत के कण–कण में राम हैं। राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा ने भारत की सुप्त आत्मा को जागृत करने का काम किया है। राम मंदिर के निर्माण से सशक्त राष्ट्र का निर्माण होने वाला है। राम मंदिर के निर्माण से भारत में रामराज्य आने वाला है। भारत की जय जयकार दुनिया में हो रही है। यह वास्तव में भारत की सुप्त आत्मा है। यही भारत को दुनिया के अंदर सर्वशक्तिशाली बनायेगी। भारत के प्रत्येक व्यक्ति के मन में जो रामभक्ति है वहीं राष्ट्रभक्ति है। राजनीति तोड़ने का कार्य करती है, धर्म जोड़ता है। राम मंदिर ने देश को जोड़ दिया है।

राष्ट्रीय अस्मिता और अखण्डता भी अयोध्या से जुड़ी है। श्रीराम मंदिर केवल धार्मिक आस्था का प्रश्न नहीं है, इसके साथ देश का अर्थशास्त्र भी जुड़ा है। भावी सामाजिक संरचना की संकल्पना भी जुड़ी है। अयोध्या अब राजनीति का भावी स्वरूप निर्धारित करेगी। व्यक्ति और राष्ट्र का चरित्र निर्माण, कालसापेक्ष किन्तु कालातीत दर्शन और दृष्टि का सृजन बीज राम मंदिर निर्माण में निहित है। विश्व के कई देशों में रचने और बसने वाले हिन्दू धर्मावलंबी तो राम मंदिर में प्राण–प्रतिष्ठा को लेकर उत्साहित हैं ही ,अनेक ऐसे देश भी इसमें सहभागिता दे रहे हैं जो अन्य किसी धर्म का पालन करते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि श्री राम की स्वीकार्यता पूरे विश्व में है। उस दृष्टि से 22 जनवरी की तिथि विश्व इतिहास में सदा के लिए अमर रहेगी। श्रीराम की जन्मभूमि पर उनका भव्य मंदिर दुनिया भर में फैले असंख्य सनातनियों की आस्था और आकांक्षा का अभिनव केंद्र बनेगा, इसमें किसी को संदेह नहीं है।

राममंदिर किसी की आस्था पर आक्रमण नहीं, भारत की अस्मिता से जुड़े प्रश्नों का उत्तर है। राम मंदिर देश और अयोध्या में अनेक हैं, अनेक और मंदिर बनाए जा सकते हैं किंतु राम जन्मस्थान एक ही हो सकता है, अनेक नहीं। इस पवित्र राष्ट्रीय स्थान पर राष्ट्र की गरिमा के अनुरूप एक मंदिर बनना, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की गारन्टी ही नहीं, भारत की पहचान का प्रमाणपत्र भी है।

पुरातन, सनातन के साथ–सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

—प्रमोद भार्गव—

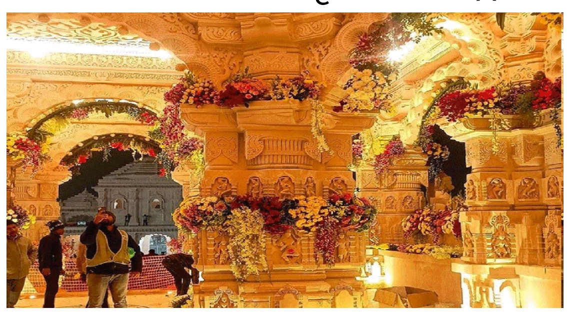

अयोध्या में राम मंदिर निर्माण के साथ राम की पुरातन एवं सनातन ऐतिहासिकता के साथ–साथ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की स्थापना भी हो जाएगी। अब विभिन्न रामायणों में दर्ज उस विज्ञान की वैज्ञानिकताओं को भी मान्यता देने की जरूरत है, जिन्हें वामपंथी पूर्वाग्रहों के चलते वैज्ञानिक एवं बुद्धिजीवी न केवल नकारते रहे हैं, बल्कि इनकी ऐतिहासिकता को भी कपोल–कल्पित कहकर उपहास उड़ाते रहे हैं। अतऐव यह समय प्राचीन भारतीय विज्ञान के पुनरुत्थान का भी काल है। क्योंकि रामायण और महाभारत कथाएं नाना लोक स्मृतियों और विविध आयामों में प्रचलित बनी रहकर वर्तमान हैं। इनका विस्तार भी सार्वभौमिक है।देश–दुनिया के जनमानस में राम–कृष्ण की जो मूर्त–अमूर्त छवि बनी हुई है। शायद इसीलिए भवभूति और कालिदास ने रामायण को इतिहास बताया। वाल्मीकि रामायण और उसके समकालीन ग्रंथों में 'इतिहास' को 'पुरावृत्त' कहा गया है। गोया, कालिदास के 'रघुवंश' में विश्वामित्र राम को पुरावृत्त सुनाते हैं। मार्क्सवादी चिंतक डॉ. रामविलास शर्मा ने रामायण को महाकाव्यात्मक इतिहास की श्रेणी में रखा है। जबकि इन ग्रंथों में विज्ञानसम्मत अनेक ऐसे सूत्र व स्त्रोत मौजूद हैं, जिनके जरिए नए आविष्कार की दिशा में बढ़ा जा सकता है। विज्ञानसम्मत अंषों को संकलित कर पाठ्यक्रमों में शामिल करने की जरूरत है। ऐसा करने से मेधावी छात्रों में विज्ञानसम्मत महात्वाकांक्षा जागेगी और भारतीय जीवन–मूल्यों के इन आधार ग्रंथों से मिथकीय आध्यात्मिकता की धूल झाड़ने का काम भी संपन्न होगा।वैसे भी ज्यादातर रामायणों उल्लेख है की भगवान राम लंका विजय के बाद माता सीता,भाई लक्षमण,हनुमान और सुग्रीव के साथ पुष्पक विमान में बैठकर अयोध्या पहुंचे थे।

इतिहास तथ्य और घटनाओं के साथ मानव की विकास यात्रा की खोज भी है। यह तय है कि मानव, अपने विकास के अनुक्रम में ही वैज्ञानिक अनुसंधानों से सायास–अनायास जुड़ता रहा है। ये वैज्ञानिक उपलब्धियां या आविष्कार रामायण, महाभारतकाल मे उसी तरह चरमोत्कर्ष पर थे, जिस तरह ऋग्वेद के लेखन–संपादन काल के समय संस्कृत भाषायी विकास के शिखर पर थी। रामायण का शब्दार्थ भी राम का 'अयण' अर्थात 'भ्रमण' से है। तीन सौ रामायण और अनेक रामायण विषयक संदर्भ गंथ, जिनके प्रभाव को नकारने के लिए पाउला रिचमैन ने 1942 में 'मैनी रामायणस द डाइवर्सिटी आफ ए नैरेटिव ट्रेडिशन इन साउथ एशिया' लिखी और एके रामानुजन ने 'थ्री हंड्रेड' रामायण फाइव एग्जांपल एंड थ्री थॉट्स आन ट्रांसलेशन' निबंध लिख कर अनर्गल अंशों को गढ़कर सच्चाई को झुठलाया। जबकि इन्हीं रामायणों, रामायण विषयक संदर्भ ग्रंथों और मदन मोहन शर्मा शाही के बृहद् उपन्यास से विज्ञानसम्मत आविष्कारों की पड़ताल की जा सकती है। रामायण एकांगी दृष्टिकोण का वृतांत भर नहीं है। इसमें कौटुम्बिक सांसारिकता है। राज–समाज संचालन के कूट–मंत्र हैं। भूगोल है। वनस्पति और जीव जगत हैं। राष्ट्रीयता है। राष्ट्र के प्रति उत्सर्ग का चरम है। अस्त्र–शस्त्र हैं। यौद्धिक कौशल के गुण हैं। भौतिकवाद है। कणाद का परमाणुवाद है। सांख्य दर्शन और योग के सूत्र हैं। वेदांत दर्शन है और अनेक वैज्ञानिक उपलब्धियां हैं। गांधी का राम–राज्य और पं. दीनदयाल उपाध्याय के आध्यात्मिक भौतिकवाद के उत्स इन्हीं रामायणों में हैं। वास्तव में रामायण और उसके परवर्ती ग्रंथ कवि या लेखक की कपोल–कल्पना न होकर तात्कालिक ज्ञान के विश्व कोश हैं। जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने तो ऋग्वेद को कहा भी था कि यह अपने युग का विश्व–कोश है। अर्थात 'एन–साइक्लोपीडिया ऑफ वर्ल्ड ' !

लंकाधीश रावण ने नाना प्रकार की विधाओं के पल्लवन की दृष्टि से यथोचित धन व सुविधाएं उपलब्ध कराईं थीं। रावण के पास लडाकू वायुयानों और समुद्री जलपोतों के बड़े भण्डार थे। प्रक्षेपास्त्र और ब्रह्मास्त्रों का अकूत भण्डार व उनके निर्माण में लगी अनेक वेधशालाएं थीं। दूरसंचार व दूरदर्शन की तकनीकी–यंत्र लंका में स्थापित थे। राम–रावण युद्ध केवल राम और रावण के बीच न होकर एक विश्व युद्ध था। जिसमें उस समय की समस्त विश्व–शक्तियों ने अपने–अपने मित्र देश के लिए लड़ाई लड़ी थी। परिणामस्वरूप ब्रह्मास्त्रों के विकट प्रयोग से लगभग समस्त वैज्ञानिक अनुसंधान–शालाएं उनके आविष्कारक, वैज्ञानिक व अध्येता काल–कवलित हो गए। यही कारण है कि हम कालांतर में हुए महाभारत युद्ध में वैज्ञानिक चमत्कारों को रामायण की तुलना में उत्कृष्ट व सक्षम नहीं पाते हैं। यह भी इतना विकराल विश्व–युद्ध था कि रामायण काल से शेष बचा जो विज्ञान था, वह महाभारत युद्ध के विध्वंस की लपेट में आकर नष्ट हो गया। इसीलिए महाभारत के बाद के जितने भी युद्ध हैं, वे खतरनाक अस्त्र–शस्त्रों से न लड़े जाकर थल सेना के माध्यम से ही लड़े गए दिखाई देते हैं। बीसवीं सदी में हुए द्वितीय विश्व युद्ध में जरूर हवाई हमले के माध्यम से अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा–नागाशाकी में परमाणु हमले किए थे।

वाल्मीकि रामायण एवं नाना रामायणों तथा अन्य ग्रंथों में 'पुष्पक–विमान' के उपयोग के विवरण हैं। इससे स्पष्ट होता है, उस युग में राक्षस व देवता न केवल विमान–शास्त्र के ज्ञाता थे, बल्कि सुविधायुक्त आकाशगामी साधनों के रूप में वाहन उपलब्ध थे। रामायण के अनुसार पुष्पक–विमान के निर्माता ब्रह्मा थे। ब्रह्मा ने यह विमान कुबेर को भेंट किया था। कुबेर से इसे रावण ने छीन लिया। रावण की मृत्यु के बाद विभीषण इसका अधिपति बना और उसने फिर से इसे कुबेर को दे दिया। कुबेर ने इसे राम को उपहार में दे दिया। राम लंका विजय के बाद अयोध्या इसी विमान से पहुंचे थे। रामायण में दर्ज उल्लेख के अनुसार पुष्पक–विमान मोर जैसी आकृति का आकाशचारी विमान था, जो अग्नि–वायु की समन्वयी ऊर्जा से चलता था। इसकी गति तीव्र थी और चालक की इच्छानुसार इसे किसी भी दिशा में गतिशील रखा जा सकता था। इसे छोटा–बड़ा भी किया जा सकता था। यह सभी ऋतुओं में आरामदायक यानी वतानुकूलित था। इसमें स्वर्ण–खंभ, मणि निर्मित दरवाजे, मणि–स्वर्णमय सीढ़ियां, वेदियां (आसन) गुप्त–गृह, अट्टालिकाएं (केबिन) तथा नीलम से निर्मित सिंहासन (कुर्सियां) थे। अनेक प्रकार के चित्र एवं जालियों से यह सुसज्जित था। यह दिन और रात दोनों समय गतिमान रहने में समर्थ था। इस विवरण से ज्ञात होता है, यह उन्नत प्रौद्योगिकी और वास्तुकला का अनूठा नमूना था।

स्कूली शिक्षा की चुनौतियां

—ललित गर्ग—

नया भारत एवं विकसित भारत को निर्मित करने का मुख्य आधार शिक्षा है, लेकिन भारत की ग्रामीण शिक्षा को लेकर आयी एनुअल स्टेटस ऑफ एजुकेशन रिपोर्ट (ग्रामीण) 2023 चिन्ताजनक एवं चुनौतीपूर्ण है। इस सर्वे में ग्रामीण भारत में छात्रों की स्कूली शिक्षा और सीखने की स्थिति की तस्वीर बयां की गई है, ग्रामीण शिक्षा की इन निराशाजनक स्थितियों पर गौर करना जरूरी है। यह सर्वे 26 राज्यों के 28 जिलों में किया गया और 34,745 युवाओं तक इस सर्वे की पहुंच रही। ग्रामीण छात्रों ने जो तथ्य एवं सच्चाई व्यक्त की है, उसके अनुसार 14 से 18 आयु वर्ग के बच्चे अपनी क्षेत्रीय भाषा में दूसरी कक्षा के स्तर तक का पाठ नहीं पढ़ पाते। इस उम्र के तीसरी–चौथी क्लास के गणित के सामान्य से प्रश्नों को हल न कर सकें तो यह कोई अच्छी स्थिति नहीं कही जा सकती। ग्रामीण युवाओं की पसंद विज्ञान एवं तकनीकी विषयों की बजाय आर्ट्स विषय ही होना, शिक्षा के प्रति उपेक्षा एवं उदासीनता को ही दर्शा रहा है। समस्या गणित या भाषा नहीं है, ग्रामीण क्षेत्रों की पढ़ाई में यह पिछड़ापन अपने देश के लिए कोई नई बात नहीं। यह चुनौती बड़ी इसलिए है कि नवीन शिक्षा नीति घोषित होने के बावजूद स्कूली पढ़ाई की नियमित प्रक्रिया में इसका इलाज नहीं तलाशा गया है। जाहिर है, विशेष प्रयास करने पड़ेंगे, ग्रामीण एवं पिछडेद्द क्षेत्रों में शिक्षा को प्राथमिकता देनी होगी अन्यथा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकॉनमी बनने की राह पर बढ़ रहे देश के लिये यह चुनौती एक अंधेरा ही है।

चिंता की बात यह भी है कि नई शिक्षा नीति में खास तौर से स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में व्यापक सुधार के प्रावधान की बातें बहुत हो रही है, लुभावनी योजनाएं बन रही हैं, लेकिन उनके परिणाम जमीन पर उतरते हुए नजर नहीं आ रहे हैं। यह हमारी नीतियों की पौल खोल रहा है या नीति–निर्माता की सोच में धुंधलापन है? जिंदगी का गुणा–भाग सिखाने वाली शिक्षा में जब बच्चों को गणित की सामान्य जोड़–बाकी भी नहीं आ पा रही हो तो इसे क्या कहेंगे? यही ना कि स्कूली शिक्षा के प्रसार की बातें भले ही जोर–शोर से की जा रहीं हों लेकिन इनमें सुविधाएं अपर्याप्त हैं या नई शिक्षा नीति को बनाने में कोई कमी है। यह भी हो सकता है कि साधनों के अभाव एवं दक्ष–प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी के कारण हम नई शिक्षा नीति को प्रभावी ढंग से लागू नहीं कर पा रहे हैं। बेहतर शिक्षा देने का हमारा लक्ष्य कहीं–ना–कहीं भटका हुआ है।

इस सर्वे रिपोर्ट में गांवों की सरकारी व निजी शिक्षण संस्थाएं दोनों के बच्चों को शामिल किया गया है। यही नहीं इस सर्वे में जिन विद्यार्थियों को शामिल किया गया, उनमें 90 फीसदी से ज्यादा ने सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया है। स्मार्ट फोन का इस्तेमाल मनोरंजन के लिए ज्यादा और पढ़ाई के लिए कम होने लगा है। साफ है शिक्षा के प्रसार के लिए मोबाइल व कम्प्यूटर जैसे उपकरणों का इस्तेमाल सकारात्मक रूप से नहीं हो पा रहा है। अधिकांश बालक–बालिकाएं कम्प्यूटर या मोबाइल के माध्यम से पढ़ाई–लिखाई में फिसड्डी नजर आते हैं। हालात बदलने के लिए न केवल प्रशिक्षित शिक्षकों की स्कूलों में भर्ती जरूरी है, बल्कि दूर–दराज के इलाकों में भी शिक्षा की पहुंच को आसान किया जाना भी अपेक्षित है। देश–दुनिया ने कोरोना महामारी की जबर्दस्त चुनौती झेली है। खासकर ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों की पढ़ाई तो कोरोना काल में लगभग ठप ही हो गई थी।

फावड़े से ताबड़तोड़ हमला कर वृद्ध को मार डाला

संवाददाता—बहराइच। एक वृद्ध पर रविवार दोपहर में एक युवक ने फावड़ा से हमला कर दिया। जिससे उसकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। इससे परिवार में कोहराम मच गया। घटना की जानकारी मिलने पर पहुंची पुलिस ने दो लोगों को हिरासत में ले लिया है। हत्याकांड से क्षेत्र में सनसनी फैल गई है। हर कोई इस घटना को लेकर दंग रह गया। अभी तक इस बात का पता नहीं चल सका है कि युवक ने वृद्धि की हत्या क्यों की। फिलहाल पुलिस पूछताछ कर रही है। बहराइच जिले के नानपारा कोतवाली के गांव चंदनपुर के भिनगापुरवा में शहादत 65 वर्ष पुत्र अमीरे कारपेंटर का काम करते थे। रविवार की दोपहर में वह किसी से बात कर रहे थे। तभी वहां पर गांव के रहने वाले कुलेराज यादव पहुंच गए। उसने बिना कोई बातचीत किए शहादत के गर्दन पर ताबड़तोड़ फावड़े से हमला कर दिया। हमले में वृद्धि की गर्दन कट गई। और मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। परिजनों ने इसकी सूचना पुलिस को दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दो लोगों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। दिनदहाड़े हुई इस हत्या से इलाके में सनसनी फैल गई है।

तोरण द्वारों से सज गया नेपाल का प्रवेश द्वार रुपईडीहा

संवाददाता—बहराइच। अयोध्या में होने जा रही श्री राम के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर 21 जनवरी को नेपाल सीमा से सटे रुपईडीहा नगर पंचायत को भव्यता के साथ सजा दिया गया है। आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी श्री राम के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर भारी उत्साह है। लोग छोटे–मोटे मंदिरों व शिवालयों में साफ सफाई कर रहे हैं। भक्त झंडे व झंडियां लेकर बाजार से जा रहे हैं। दर्जियों को झंडा सिलने से फुर्सत नहीं मिल रही है, उन्हें भी रोजगार का सुअवसर प्राप्त हुआ है। सोमवार को इस भव्य आयोजन का उत्सव पूर्ण माहौल बनेगा। पूरा क्षेत्र भगवामय हो चला है। स्थानीय श्री राम जानकी मंदिर के महंत भगवान दास ने बताया कि सोमवार को प्रातः दस बजे मंदिर प्रांगण से भव्य शोभा यात्रा निकाली जाएगी।

श्री राम के विभिन्न स्वरूपों की झांकियां के साथ सनातनी ध्वज लेकर श्री राम का जयकार करते हुए निकलेंगे। इस पर्व को मनाने में रामजानकी वार्ड के सभासद नरेंद्र मदेशिया के नेतृत्व में श्री राम भक्त रिंकू अवस्थी, योगेंद्र शर्मा आदि दर्जनों युवक तल्लीनता से इस समारोह को यादगार बनाने के लिए दिनरात एक कर रहे है। यह शोभायात्रा बाबागंज चरदा जमोग व आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों से होती हुई पुनः रामजानकी मंदिर में विसर्जित होगी। उसके बाद भगवान श्री राम की आरती की जाएगी। इसके बाद प्रसाद वितरण किया जाएगा।

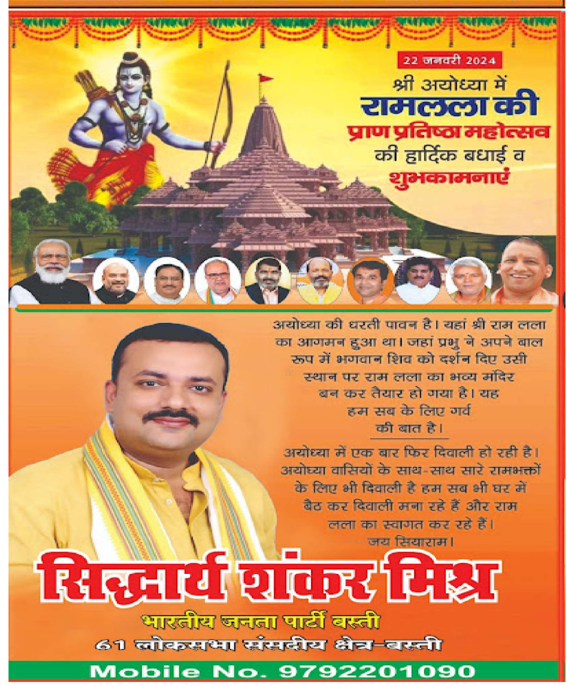

सीमावर्ती इलाके में एसएसबी ने 21 पेटी सेब पकड़ा

संवाददाता—बहराइच। चीन अपने यहां उत्पादित वस्तुओं की तस्करी नेपाल होकर भारत में करा रहा है। सीमावर्ती भारत नेपाल तस्करों के गैंग इस अवैध काम में संलिप्त हैं। कभी प्लास्टिक के चायनीज चावल, कभी चाकलेट, कभी मोबाइल सेट, चायनीज लहसुन व अब चायनीज सेब तस्करी का भी खुलासा हुआ। खुली सीमा का लाभ उठाते हुए तस्कर चीन से नेपाल व नेपाल से भारत को प्रतिबंधित वस्तुओं की बड़े पैमाने पर तस्करी कर रहे हैं। शनिवार की देर शाम अंधेरे का लाभ उठाकर साइकिलों पर सेब लादकर जा रहे लोगों को देखकर शिवपुरा बीओपी के जवानों ने देखकर दौड़ा लिया। कुछ तस्कर सेब लदी पेटियां भारतीय क्षेत्र में गिराकर नेपाल में भाग गए। एक तस्कर 26 वर्षीय रियासत अली कबड़िया पुत्र शाहिद अली कबड़िया निवासी गांव पचपोखरा थाना जोगागांव जिला बांके राष्ट्र नेपाल को पकड़ लिया गया। यह कार्यवाही शिवपुरा बीओपी पर तैनात इंस्पेक्टर कुमार ऋतुराज, मुख्य आरक्षी वीर सिंह सैनी, आरक्षी मुकेश यादव, शंकर यादव व दिनेश यादव ने की है। सेब की 21 पेटियां जिसका वजन 420 किलो तथा तस्कर रियासत अली कबड़िया को रुपईडीहा कस्टम को सौप दिया गया है। रुपईडीहा के नेपाल सीमा से सटे जमुनहा गांव घसियारन टोल होते हुए मुख्य बाजार से भी पूरे दिन सेब की पेटियां लादकर तस्कर नित्य निकल रहे हैं, जबकि बार्डर पर एसएसबी के जवान तैनात हैं।

प्रभु की प्राण प्रतिष्ठा में पूरा विश्व गर्भ महसूस कर रहा है –प्रभंजनानंद महाराज

—भारतीय बस्ती संवाददाता—

अयोध्या। प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में पौष शुक्ल पक्ष एकादशी रविवार को बेदी पूजन महास्नान नगर भ्रमण के साथ सिद्ध पीठ सियाराम किला झुंकी घाट के प्रथम पीठाधीश्वर ब्रह्मलीन श्री मिथिला शरण महाराज छोटे सरकार के प्रतिमा का वर्तमान पीठाधीश्वर महंत करुणानिधान शरण महाराज दिशा निर्देशन में शय्याधिवास कराया गया 22 जनवरी पौष शुक्ल पक्ष द्वादशी सोमवार को श्री महाराज जी के प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा हवन पूर्णाहुति के साथ संपन्न होगी। इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय ख्याति लब्ध प्रभंजनानंद शरण महाराज ने श्री राम कथा में बताया कि वर्तमान समय आधुनिक युग का समय है ऐसे में प्रभु श्री राम के लिए पूरे विश्व में अनुराग उमड़ रहा है यह उनके द्वारा किए गए मर्यादा पालन का प्रतिफल है। उन्होंने बताया कि पिता के कहने पर श्री राम वन को जाते हैं भरत की मनाने जाते हैं उनके साथ माता कैकई भी होती हैं और वही भरी सभा में माता कहती है कि मैं अपने वचनों से आपको मुक्त कर रही हूं राम और अयोध्या लौट चलो। कोई सामान्य व्यक्ति होता तो निश्चित लौटा था लेकिन प्रभु श्री राम ने कहा कि माता वचन मेरे पिता के थे अब वह नहीं है इसलिए मुझे उनके वचन का पालन करना ही है और अयोध्या लौटने के बाद प्रभु भरत के बाद सबसे पहले कैकई से ही मिलते हैं यही मर्यादा है और इसीलिए मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम है आवाज उनकी प्राण प्रतिष्ठा में देश ही नहीं पूरा विश्व गर्भ महसूस कर रहा है। श्री महाराज जी ने बताया कि भगवान श्री राम इस जगत के मूल हैं उन्होंने मर्यादा की स्थापना की और लोगों को बताया कि मर्यादित जीवन ही पुरुषोत्तम जीवन होता है ।

दैनिक भारतीय बस्ती

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक प्रदीप चन्द्र पाण्डेय द्वारा दर्पण प्रिन्टिंग प्रेस वि0. नया हाल 1–4 A लोहिया काम्पलेक्स जिला पंचायत भवन गांधीनगर बस्ती (उ.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक दिनेश चन्द्र पाण्डेय

प्रबन्ध सम्पादक—**दिनेश सिंह**
संयुक्त सम्पादक—**प्रदीप चन्द्र पाण्डेय**
अयोध्या—फैजाबाद कार्यालय—
चतुर्भुजी मंदिर परिसर लक्ष्मण घाट अयोध्या—फैजाबाद
लखनऊ कार्यालय—
आशियाना चौराहा, एल.डी.ए. कालोनी, सेक्टर एच. कानपुर रोड लखनऊ।
गोरखपुर कार्यालय—
इलाहीबाग गोरखपुर।
मो09450567450 9336715406,
ई.मेल**bhartiyabasti@yahoo.com**
bhartiyabasti@gmail.com

श्रीरामोत्सव

"राम मंदिर के निर्माण की यह प्रक्रिया राष्ट्र को जोड़ने का उपक्रम है।"
-नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

सप्तपुरियों में प्रथम श्रीअयोध्या धाम में
प्रभु श्रीराम के बाल रूप विग्रह का

प्राण प्रतिष्ठा समारोह

गरिमामयी उपस्थिति

नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

डॉ. मोहनराव भागवत
सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

महंत नृत्यगोपाल दास
अध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र न्यास

एवं अन्य गणमान्य महानुभाव

दिनांक : 22 जनवरी, 2024 | समय : अपराह्न 12:20 बजे | स्थान : श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, श्रीअयोध्या धाम

लाइव प्रसारण DD NEWS व Youtube.com/DDNEWS Youtube.com/dduttarpradesh एवं UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश